जोधपुर राज्य की शिक्षण व्यवस्था का स्तर एवं विकास (1800-1947 ई.)

बिन्टू

जोधपुर राज्य में शिक्षा की स्थिति को भलिभांति समझने के लिए अध्ययन काल को निम्न चरणों में विभाजित किया गया है, जो इस प्रकार से है-

(1) 19वीं सदी के प्रथम चरण (1800-1850 ई.) में शिक्षा की स्थिति -

वर्ष 1843 में महाराजा तख्तसिंह जोधपुर के राजसिंहासन पर आसीन हुए। जोधपुर राज्य में इस दौर में शिक्षा या सार्वजनिक कार्यों के लिए कोई विभाग नहीं था। साठ के दशक में शिक्षा केवल बैंकिंग और ब्राह्मण जाति तक ही सीमित थी। अन्य जातियों के लिए शिक्षा को सीमांत उपयोगिता माना जाता था। कुछ विद्यालय थे, कुछ शिक्षक थे और अभी भी कम पढ़ाते थे।[1]

1850 के दशक की शुरुआत में, राज्य में केवल एक स्कूल था, जिसका नाम 'विद्याशाला' था, जिसने ''लगभग बत्तीस विद्वानों को संस्कृत और फारसी में शिक्षा प्राप्ति का एक साधन प्रदान किया।[2]

विद्याशाला


विद्याशाला

राजधानी के लोगों को शिक्षित करने के विचार की कल्पना करने वाले कर्नल फ्रेंच की रुचि के परिणामस्वरूप महाराजा तख्तसिंहजी द्वारा 1844 ई. में विद्याशाला की स्थापना जोधपुर में की गई।[3] इससे जुड़ी वेधशाला के लिए भवन का निर्माण किया गया था और उपकरण भी खरीदे गए थे। स्कूल शहर से दूर होने के कारण, बच्चों के लिए निःशुल्क परिवहन के लिए प्रत्येक सुबह गाड़ियों का उपयोग किया जाता था।[4] विद्याशाला की अस्पश्य सफलता केवल छह महीने तक चली। बाद में यह कुछ वर्षों तक तीस विद्यार्थियों को संस्कृत और फारसी में शिक्षा प्रदान करने वाले एक साधारण स्कूल के रूप में अस्तित्व में बना रहा।[5]

यहां बच्चों को पढ़ाने की व्यवस्था की गई। एक अंग्रेजी, एक फारसी, एक पंडित, दो संस्कृत शिक्षकों की नियुक्ति की गई। यह स्कूल पांच साल तक चला। इसके बाद इसे बंद कर दिया गया। विक्रम संवत 1923 (1866 ई.) में यहां तेलग साहब के शिविर का आयोजन किया गया था। इसके बाद दीवान मर्दन अली खान जी का डेरा भी इसी स्थान पर रहा। उन्होंने नया निर्माण करवाया और विद्याशाला के ऊपर बंगला बनवाया। विद्याशाला का महल बनने के बाद महाराजा तख्तसिंहजी भी कभी-कभार यहां रहने लगे।

कालान्तर में मुंशी हरदयाल सिंह भी इसी महल में रहे। उनके समय में दरवाजे, कांच आदि के जीर्णोद्धार का कार्य किया जाता था। महाराजा जसवंत सिंह (द्वितीय) के समय में खंभों और महलों को आगे बढ़ाकर नए-नए कार्य किए गए। बाग लगाया गया। विद्याशाला के स्थान को पहले बड़ा माजी चैहानजी सा का बाग कहा जाता था। महाराजा तख्तसिंहजी के समय में इसका नाम विद्याशाला रखा गया था। वर्तमान में यहां एक सरकारी स्कूल चल रहा है।[6]

कैप्टन फ्रेंच के जाने के बाद, एक पॉलिटिकल रेजीडेन्ट, जिसने स्कूल की प्रगति में गहरी दिलचस्पी ली, इसकी बहुत उपेक्षा की गई। स्कूल पुस्तकालय अलमारी में बंद और अनुपयोगी पड़ा रहा। स्कूल के कर्मचारियों का वेतन बकाया हो गया और राजनीतिक एजेंट की मध्यस्थता से ही शिक्षकों को पांच महीने का बकाया वेतन दिया गया।[7]

इस दौर में जोधपुर में शिक्षा के विकास को मंद करने वाले कई प्रमुख कारण देखे जा सकते है, जो इस प्रकार से है-

- शासक और ठाकुरों की अंतर्निहित विरोधी नीति।
- शिक्षा को इस समय गायन और नृत्य की भांति कला के रुप में गिना जाता था, और सामन्त अपने सेवकों को उन कलाओं के प्रदर्शन करने के लिए भुगतान करते थे।[8]

मेजर वॉल्टर ने जोधपुर में शैक्षिक सुविधाओं पर टिप्पणी करते हुए कहा कि ''जोधपुर के युवा हिंदी के अलावा, अन्य शिक्षा प्राप्त नहीं करते हैं।''[9]

(2) 19वीं सदी के द्वितीय चरण (1850-1900 ई.) में शिक्षा की स्थिति -

उन्नीसवीं सदी के साठ के दशक तक ब्रिटिश राजनीतिक अधिकारियों और राजस्थान के शासक प्रमुखों के बीच संचार का माध्यम फारसी था। दोनों में से कोई भी इसे ठीक से पढ़ और समझ नहीं पाते थे, इसलिए जोधपुर राज्य के पी.ए. मेजर डिक्सन ने ए.जी.जी. को सुझाव दिया कि स्थानीय अधिकारियों द्वारा प्रस्तुत की गई स्थानीय रिपोर्ट

फारसी या हिंदी के बजाय अंग्रेजी में लिखी जानी चाहिए। प्रमुखों ने अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक मामलों के बारे में अंग्रेजी में संवाद करना भी पसंद किया।[10] यह सब देखते हुए यह आवश्यकता अनुभव की गई कि अंग्रेजी भाषा का अध्ययन और एक आधुनिक स्कूल की स्थापना होनी चाहिए। लेकिन यह जोधपुर में पहली बार नहीं था कि अंग्रेजी स्कूल खोलने का सफल प्रयास किया गया था। सबसे पहले स्कूल जोधपुर राज्य के मालानी परगना के जसोल और बाड़मेर में खोले गए थे, जो 1836 ई. से अंग्रेजी प्रशासन के सीधे नियन्त्रण में थे। 1868 ई. में लगभग सौ लड़कों ने इन स्कूलों में प्रवेश लिया।[11] राजनीतिक एजेंट ने एक विशेष निधि से उक्त स्कूलों को वित्त पोषित किया।[12]

वर्ष 1869 ई. में जोधपुर में दरबार स्कूल की स्थापना हुई। इसके बाद जिलों के मुख्यालयों पर नौ स्कूल खोले गए। 1873 ई. में पाली में एक एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल खोला गया था।[13] सत्तर के दशक के अंत में, पच्चीस स्कूल और 1042 विद्यार्थी थे।[14] जोधपुर में एक दरबार हाई स्कूल, एक शाखा स्कूल, एक नोबल स्कूल, पाली में दो स्कूल और जिलों में बीस थे। दरबार स्कूल को 3 जुलाई 1876 को हाई स्कूल स्टैन्डर्ड तक बढ़ा दिया गया था। मारवाड़ी लोगों को सीखने की कोई वास्तविक रूचि नहीं थी, लेकिन उनमें से कुछ ने आकर्षक पदों को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त सीखा।[15]

तालिका सं.-1

1891-92 एवं 1901-02 के वर्ष में जोधपुर में शिक्षा की स्थिति[16]

संस्था	1891-92			1901-02		
	स्कूल	विद्यार्थी	दैनिक औसत उपस्थिति	स्कूल	विद्यार्थी	दैनिक औसत उपस्थिति
कला कॉलेज	–	–	–	1	15	13
हाई स्कूल	1	–	–	1	–	–
क) अपर सैकण्डरी	–	12	182	–	7	227
[illegible]	–	37		–	33	
ग)प्राइमरी स्कूल	–	336		–	252	
घ)टेलीग्राफ	–	34	16	–	36	29
एंग्लो-वर्नाक्यूलर प्राइमरी स्कूल	7	301	213	10	513	412
वर्नाक्यूलर प्राइमरी स्कूल	21	827	579	19	766	566
गर्ल्स स्कूल	1	76	44	1	62	50
संस्कृत स्कूत, विशेष स्कूल,पाउलेट नोबेल्स स्कूल	2	42	23	2	30	20
सर्वेक्षण कक्षा	–	–	–	–	4	4
कुल संस्थाएं	32	1665	1057	34	1718	1321

सन् 1884-85 की रिपोर्ट से यह ज्ञात होता है कि उस समय जोधपुर और मालानी दोनों क्षेत्रों में कुल मिलाकर केवल 5 स्कूल थे जिनमें से 3 तो जोधपुर शहर में ही स्थित थे। शेष दो पाली में थे और इनमें विद्यार्थियों की औसत उपस्थिति 536 थी। ये स्कूल थे-

1. जोधपुर दरबार स्कूल

2. जोधपुर नोबल्स स्कूल

3. जोधपुर हिन्दी ब्रांच स्कूल

4. एंग्लो-वर्नाक्युलर स्कूल (पाली)

5. हिन्दी ब्रांच स्कूल (पाली)

1884-85 में शिक्षा पर राज्य की ओर से रु. 9,225-8-0 खर्च किये गये। इस राशि में से बहुत बड़ा भाग जोधपुर दरबार स्कूल पर खर्च किया गया। जोधपुर दरबार स्कूल का स्टाफ इस प्रकार था-

1 हेडमास्टर, 8 मास्टर, 3 पर्सियन टीचर, 2 संस्कृत अध्यापक, 2 हिन्दी अध्यापक।[17]

इस स्कूल में छात्रों के लिए अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, संस्कृत और हिन्दी भाषा के अध्यापन की व्यवस्था थी। जोधपुर शहर में विभिन्न कौमों के लिए अपने पृथक-पृथक् स्कूल स्थापित करवाने का श्रेय सरप्रताप को ही जाता है। सरप्रताप के प्रोत्साहन व प्रेरणा से ही शहर (जोधपुर) में कायस्थ, पुष्करणा ब्राह्मण, माली, राजपूत आदि कौमों की अपनी स्कूलें स्थापित हुई।

सर प्रताप स्कूल-

1887 ई. में कायस्थ स्कूल का उद्घाटन सर प्रताप के हाथों से होने के कारण उसका नाम 'सर प्रताप स्कूल' रखा गया। 29 अगस्त 1894 ई. को मालियों की स्कूल (सुमेर स्कूल) का उद्घाटन महाराजकुमार सुमेरसिंह ने किया और 500 रुपए की सहायता दी। मार्च 1897 ई. में महाराज प्रतापसिंहजी चांदपोल दरवाजे के बाहर शिवबाड़ी में किये गये श्रीमाली ब्राह्मणों के उत्सव में पधारे और उनके जातीय स्कूल के लिए राज्य की तरफ से 5000 रुपए दिये जाने की घोषणा की। अगस्त 1897 ई. में प्रतापसिंह ने ओसवालों के स्कूल का निरीक्षण कर उसके लिए 7000 रुपये राज्य की ओर से और 2000 रुपए अपनी तरफ से देने का आदेश दिया। इसी प्रकार अन्य जातीय स्कूलों को भी राज्य सहायता दी गई।[18]

तालिका सं.-2

1904-05 एवं 1905-06 के वर्ष में जोधपुर में शिक्षा की स्थिति[19]

संस्था	1904-05			1905-06		
	स्कूल	विद्यार्थी	दैनिक औसत उपस्थिति	स्कूल	विद्यार्थी	दैनिक औसत उपस्थिति
कला कॉलेज	1	25	21	1	33	32
हाई स्कूल	1	–	–	1	–	–
क) अपर सैकण्डरी	–	18	440	–	18	492
	–	39			35	
ग)प्राइमरी स्कूल	–	528			526	
घ)टेलीग्राफ	–	31	16	–	31	15
एंग्लो-वर्नाक्यूलर प्राइमरी स्कूल	10	640	213	13	907	686
वर्नाक्यूलर प्राइमरी स्कूल	19	949	579	31	1556	1246
गर्ल्स स्कूल्स	1	49	44	1	97	62
संस्कृत स्कूल, विशेष स्कूल, पाउलेट नोबेल्स स्कूल	1	40	25	2	59	37
सर्वेक्षण कक्षा	–	–	–	–	–	–
कुल संस्थाएं	33	2319	1761	49	3261	2570

1891-92 और 1901-02 के आंकड़े निम्नलिखित कारणों से पूर्ण नहीं हैं। स्थानीय भाषा के स्कूलों में 1891-92 में मालानी में पांच और 1901-02 में चार शामिल हैं, लेकिन उपरोक्त में से किसी भी वर्ष में इन संस्थानों में से किसी के रोल पर संख्या, या दैनिक औसत उपस्थिति के बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। इसी तरह, विशेष स्कूल 1891-92 में संस्कृत स्कूल और पॉवलेट नोबल स्कूल और 1901-02 में संस्कृत स्कूल और एल्गिन राजपूत स्कूल थे, लेकिन उपस्थिति आदि के बारे में जानकारी केवल संस्कृत स्कूल की उपलब्ध है। 1903-04 में एल्गिन स्कूल को दरबार हाई स्कूल के साथ मिला दिया गया था, 1904-05 में केवल एक विशेष संस्थान (संस्कृत स्कूल) छोड़ दिया गया था, लेकिन अगले वर्ष में रईसों के स्कूल को फिर से स्थापित किया गया था। सर्वेक्षण कक्षा कॉलेज में आयोजित की गई थी, और इसलिए इसे एक अलग स्कूल के रूप में नहीं माना गया है; इसे 1904 में समाप्त कर दिया गया था।

वर्ष 1900 में विद्यार्थियों का जातिवार विभाजन इस प्रकार से था- 376 ब्राह्मण, 61 राजपूत, 416 महाजन, 68 कायस्थ, 163 मुसलमान, 2 ईसाई, तीन पारसी और 327 अन्य। जसवंत कॉलेज ने 1901 ई. में तीन लड़कों को बी.ए. की परीक्षा के लिए भेजा और सभी अनुत्तीर्ण हो गए। इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए जाने वाले

छह विद्वानों में से तीन उत्तीर्ण हुए।[20]

ह्यूसन गर्ल्स स्कूल में प्रवेशित बालिकाओं की संख्या इस प्रकार से थी- 27 ब्राह्मण, 15 राजपूत, 12 महाजन और 4 अन्य बालिकाएँ। यह महत्वपूर्ण था कि स्कूल में कोई मुसलमान और कायस्थ लड़की नहीं थी।[21]

(3) 20वीं सदी के प्रथम चरण (1900-1947 ई.) में शिक्षा की स्थिति -

20वीं सदी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत नवीन परिवर्तन लाने वाली सिद्ध हुई। इस समय जोधपुर में महाराजा सरदारसिंह का शासन था। उनके समय शिक्षा की प्रगति को अग्रलिखित सारणी द्वारा स्पष्ट किया गया है -

तालिका सं. 3

जोधपुर राज्य में संचालित संस्कृत व वैदिक पाठशालाओं की सूची (1906 ई.)[22]

स्थान	स्कूल का नाम	संचालन (के द्वारा)	पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या	दैनिक औसतन उपस्थिति
जोधपुर	वैदिक पाठशाला	श्रीमाली ब्राह्मण	50	41
''	एंग्लों-वैदिक पाठशाला (प्राईमरी)	''	35	....
''	हिन्दी पाठशाला	छरबार	180	126
''	संस्कृत पाठशाला	''	31	24
कुचामन	खूबीराम संस्कृत पाठशाला	थनजी	38	....
सोजत	वैदिक पाठशाला	''	53	....

शिक्षा के मामले में, दरबार ने हमेशा एक उदार और प्रगतिशील नीति अपनाई है जिसके परिणामस्वरूप पिछले वर्ष में 115 के मुकाबले वर्ष के दौरान 120 राज्य शैक्षणिक संस्थान अस्तित्व में थे। इन संस्थानों में 1 कॉलेज, 2 हाई स्कूल, 5 एंग्लो-वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, 7 वर्नाक्युलर मिडिल, 15 प्राइमरी, 84 लोअर प्राइमरी, 1 ओरिएंटल और 2 टेक्निकल स्कूल और 3 गर्ल्स स्कूल शामिल थे।

स्थानीय आर्य समाज ने अछूतों के बच्चों को शिक्षा देने के लिए उनके द्वारा संचालित एक स्कूल को अनुदान देने के लिए राज्य को आवेदन किया। दरबार ने 40 रुपये प्रति माह की सहायता देकर उनकी अपील का जवाब दिया। ।

शारीरिक शिक्षा विकसित करने की दृष्टि से, 5 एंग्लो-वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूलों में से प्रत्येक के लिए ड्रिल प्रशिक्षकों की नियुक्ति की गई और कुछ छोटे स्कूलों को भत्ता दिया गया।

सब-असिस्टेंट सर्जन ने लड़कों की मेडिकल जांच कराने के लिए स्कूलों का दौरा करना शुरू कर दिया और इस तरह नियमित मेडिकल जांच की शुरुआत की।

मुस्लिम शिक्षण संस्थाएं –

मुस्लिमों के प्रारम्भिक शिक्षा केन्द्र 'मकतब' कहलाते थे। मकतबों में सामान्यतः फारसी, अरबी और उर्दू की प्रारंभिक शिक्षा दी जाती थी। इसके साथ ही छात्रों को कुरान की आयतों को कंठस्थ कराया जाता था। मदरसे उच्च शिक्षा के केन्द्र थें। हिन्दू शालाओं की भांति मुस्लिम स्कूल का भवन भी शिक्षक का घर, मस्जिद, चबूतरा अथवा किराये का मकान होता था। मुस्लिम स्कूलों के अधिकांश शिक्षक एवं छात्र मुसलमान होते थे। 20वीं सदी के प्रारम्भ में मुसलमानों की शिक्षा को निम्न तालिका के माध्यम से प्रकट किया गया है।

तालिका सं.-4

जोधपुर राज्य में संचालित इस्लामिया मदरसों (स्कूलों) की सूची (1906 ई.)

स्थान	स्कूल का नाम	संचालन (के द्वारा)	पंजीकृत विद्यार्थियों की संख्या	दैनिक औसतन उपस्थिति	अन्य
भकरी	मुसलमान मदरसा (उर्दू)	निजी	20	...	
डीडवाना	मुसलमान मदरसा (उर्दू)	''	25	....	
जोधपुर	इस्लामिया मदरसा (अरबी, फारसी व उर्दू)	मुसलमान समुदाय	99	50	
''	फैज़ मुहम्मद स्कूल (फारसी व उर्दू)	''	85	....	
कुचामन	मुसलमान मदरसा (फारसी व उर्दू)	निजी	50	....	
''	गुलाम मुहम्मद मदरसा (फारसी व उर्दू)	''	20	....	
नागौर	मुसलमान मदरसा (फारसी व उर्दू)	मुसलमान समुदाय	50	....	

न्यू दरबार हाई स्कूल–

वर्ष 1924-25 में नाहरजी-का-बाड़ा मैदान में 2,09,835 रुपये की लागत से नया दरबार हाई स्कूल और कॉलेज कक्षाओं को समायोजित करने के लिए एक ब्लॉक का निमाज़ण किया गया था। इस प्रकार, शैक्षिक भवनों का एक अद्यतन और बढ़िया मैदान, उनके साथ संलग्न विशिष्ट मनोरंजन मैदानों को बनाया गया है, जो कि आसपास के क्षेत्र में एक व्यापक क्षेत्र को कवर करता है और शहर के लिए आसानी से सुलभ है।[23]

दरबार हाई स्कूल –

1924-25 में, विद्यार्थियों की संख्या पिछले वर्ष के 336 से बढ़कर 355 और 1925-26 में 370 हो गया। 1924-25 में दैनिक औसत उपस्थिति 298.3 से बढ़कर 309.38 हो गई। लेकिन 1925-26 में यह फिर से घटकर 293.63 हो गया। मैट्रिक व जोधपुर की मिडिल परीक्षा का परिणाम संतोषजनक रहा।

मेंटेनेंस चार्ज रु. 47,934/-/9 दो वर्षों में अर्थात रु. 23,967/-/6 प्रति वर्ष।[24]

वर्ष 1925-26 की तरह वर्ष 1926-27 में नामांकित छात्रों की संख्या 370 थी।

यू.पी. बोर्ड की हाई स्कूल परीक्षा में 40 उम्मीदवार उपस्थित हुए और 37 उत्तीर्ण हुए (प्रथम श्रेणी में 14, द्वितीय श्रेणी में 14 और तृतीय श्रेणी में 22), इस स्कूल से पिछले 10 वर्षों के दौरान इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने वालों की यह सबसे बड़ी संख्या और उच्चतम प्रतिशत रहा। मारवाड़ मिडिल स्कूल परीक्षा के परिणाम खराब रहे, 44 में से केवल 22 छात्र उत्तीर्ण हुए।

महाराजा उम्मेदसिंह के शासनकाल में वर्ष 1930 तक पोशाल राज्य शिक्षा विभाग के नियंत्रण में थे लेकिन वर्ष 1931 में इस नियंत्रण को समाप्त कर दिया गया था, क्योंकि यह माना गया था कि ये स्वदेशी स्कूल लोगों की जरूरतों के अनुकूल उपयोगी काम कर रहे थे और इन पर आधुनिक तरीके का पाठ्यक्रम लागू करना अनुचित था। वर्ष 1930-31 ई. में राज्य शिक्षा विभाग के तहत लड़कों के लिए 146 शिक्षण संस्थान और लड़कियों के लिए 19 संस्थान थे और राज्य सहायता प्राप्त और मान्यता प्राप्त संस्थानों में विद्यार्थियों की कुल संख्या 15,023 लड़के और 1626 लड़कियां थीं।

चौपासनी स्कूल–

चौपासनी में राजपूत बोर्डिंग स्कूल राजपूत लड़कों की शिक्षा के लिए है। जागीरदारों के बेटे पॉवलेट बोर्डिंग हाउस में रहते हैं, जबकि अन्य एल्गिन हाउस में रहते

हैं। तीन छात्रावास हैं और चौथे का निर्माण प्रस्तावित है, जिससे हॉस्टल की भीड़-भाड़ थोड़ी दूर होगी और प्राथमिक कक्षाओं को अलग करने में सुविधा होगी।

छात्र संख्या और परीक्षा–

रोल पर लड़कों की कुल संख्या 386 थी, जबकि पिछले वर्ष 396 थी, जिनमें से 24 पॉवलेट बोर्डर और 347 एल्गिन हाउस से तथा 14 डे स्कॉलर्स थे। वर्ष के दौरान, 51 लड़के उत्तीर्ण होकर चले गए और 64 नवीन विद्यार्थियों को प्रवेश दिया गया। औसत उपस्थिति 367.5 थी। परीक्षा परिणाम खराब रहा। हाई स्कूल परीक्षा के लिए भेजे गए 6 में से केवल एक ही उत्तीर्ण हुआ। मारवाड़ मिडिल परीक्षा में 16 में से 7 छात्र उत्तीर्ण हुए।

पुस्तकालय- पुस्तकालय में 107 नई पुस्तकें जोड़ी गईं।

खेल–

इंटर स्कूल फुटबॉल प्रतियोगिता सीनियर व जूनियर में स्कूल ने जीत प्राप्ति की। अतिरिक्त मैदानों के लिए अधिक स्थान खाली करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं क्योंकि वर्तमान मैदान अब पर्याप्त नहीं हैं, खेलों को अनिवार्य कर दिया गया है। स्कूल कैडेट कोर ने बहुत सुबह परेड आयोजित की और मस्कटरी अभ्यास के लिए एक लघु रेंज शुरू की गई है। जिम्नास्टिक और शारीरिक व्यायाम में भी निर्देश दिया जाता है। पॉवलेट हाउस के लड़कों को सुबह और शाम घुड़सवारी का पाठ पढ़ाया जाता है। स्वीमिंग बाथ रोजाना इस्तेमाल किया जाता है और करीब 50 और लड़कों ने स्विमिंग सीखी है। बॉयज स्काउट्स ट्रूप्स उपयोगी कार्य करते रहे। वॉलीबॉल की शुरुआत की गई है। छोटे लड़के राउंडर खेलते हैं।

जोधपुर राज्य में शैक्षणिक संस्थाओं का अवलोकन (वर्ष 1924–1926)

शैक्षणिक संस्थानों की संख्या–

1924-25 में, मकराना, खरिया, खंडप और साथिन में चार नए हिंदी स्कूल खोले गए और राबड़ियाद में एक हिंदी स्कूल बंद कर दिया गया। अतः वर्ष के अंत तक राज्य द्वारा संचालित स्कूलों की संख्या पिछले वर्ष की 81 के मुकाबले 84 हो गई।

1925-26 में गाँवों में शिक्षा के प्रसार की दृष्टि से 27 नए वर्नाक्युलर स्कूल खोले गए।

दरबार से सहायता अनुदान प्राप्त करने वाले लड़कों के स्कूलों की संख्या रिपोर्ट के तहत दोनों वर्षों में समान रही, अर्थात् 17 स्कूल।

हालाँकि, 1925-26 में, सोजत, बालोतरा और डीडवाना में 3 लड़कियों के स्कूलों को क्रमशः 30, 35 एवं 20 रुपये प्रति माह का वित्तीय अनुदान दिया गया था।

नीचे दी गई तालिका राज्य में विभिन्न प्रकार के संस्थानों को दर्शाती है-

तालिका सं. 5

वर्ष 1924-26 के दौरान राज्य में संचालित शैक्षणिक संस्थान

क्रम संख्या	संस्थान का प्रकार	1924-25		1925-26	
		राजकीय	राज्य द्वारा अनुदानित	राजकीय	राज्य द्वारा अनुदानित
1	कॉलेज	1		1	....
2	हाई स्कूल			2	2
3	इंग्लिश मिडिल स्कूल			5	3
4	एंग्लो-वर्नाक्यूलर अपर प्राइमरी स्कूल	14	....	13	....
5	एंग्लो-वर्नाक्यूलर लोअर प्राइमरी स्कूल	2	....	2	....
6	वर्नाक्यूलर प्राइमरी स्कूल	57	9	84	9
7	गर्ल्स स्कूल	1	....	1	3
8	संस्कृत पाठशाला	1	....	1	....
9	टीचर ट्रेनिंग स्कूल	1	....	1	....
10	बिजनेस क्लास	1	....	1	....
11	वैदिक पाठशाला	....	1	....	1
12	मकतब	....	2	....	2
	कुल	84	17	111	20

जोधपुर राज्य में विद्यार्थियों की संख्या-

(1) राजकीय संस्थानों में-

1922 ई. की तुलना में 1924-25 ई. में राजकीय संस्थाओं में नामांकित कुल विद्यार्थियों की संख्या 4,712 से बढ़कर 5,276 हो गई, जो कि दैनिक औसत उपस्थिति में विद्यार्थियों की वृद्धि दर्शाती है, अर्थात लगभग 10.1 प्रतिशत की वृद्धि ज्ञात होती है।

वर्ष 1925-26 में विद्यार्थियों की संख्या 6,612 थी, जो 25.32 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है।

(2) अनुदानित स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या-

1921-25 में सभी सहायता प्राप्त स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या 3,351 थी, जो पूर्ववर्ती वर्ष में 3,299 थी, जो 2.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है; और 1925-26 में नामावली में विद्यार्थियों की संख्या 2,859 थी (120 लड़कियों सहित) और इस प्रकार 15.41 प्रतिशत की कमी हुई।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि राजकीय और राज्य द्वारा अनुदानित संस्थानों, दोनों में नामांकित छात्रों की कुल संख्या 1924-25 और 1925-26 में क्रमशः 8,657 और 9,471 रही, जो पिछले वर्ष में 8,011 थी, जो क्रमशः 8ः और 18ः की वृद्धि दर्शाती है।

राजकीय संस्थानों में विद्यार्थियों का वर्गीकरण-

जोधपुर राज्य की राजकीय संस्थानों में विद्यार्थियों का अग्रलिखित विवरण राजकीय संस्थानों के विद्यार्थियों का उनकी जाति के अनुसार वर्गीकरण को दर्शाता है-

(अ) जातीयता के आधार पर वर्गीकरण-

तालिका सं.-6

राजकीय संस्थानों में जातीय आधार पर वितरण[25]

संख्या	प्रतिशत					
जाति	**1923-24**	**1924-25**	**1925-26**	**1923-24**	**1924-25**	**1925-26**
ब्राह्मण	–	910	1,253	19.4	17.24	19.00
राजपूत	–	710	696	5.2	13.46	10.51
चारण	–	–	100	–	0.52	1.65
बनिया	–	–	–	–	34.00	31.08
कायस्थ	190	175	–	–	3.30	3.40
मोहम्मद	380	440	–	–	8.34	7.96
अन्य	1,098	1,221	1745	–	23.14	26.40
कुल	**4,712**	**5,276**	**6,612**	**100**	**100**	**100**

(ब) व्यवसाय के आधार पर वर्गीकरण-

माता-पिता और अभिभावकों के व्यवसायों के अनुसार वर्गीकृत, राज्य के स्कूलों में विद्यार्थियों का प्रतिशत निम्नानुसार था-

तालिका सं.-7

राजकीय संस्थानों में व्यावसायिक आधार पर वितरण[26]

व्यवसाय	प्रतिशत		
	1923-24	1924-25	1925-26
कृषि	12.7	10.7	22.7
व्यापार	37.0	38.3	25.0
सेवा	27.3	25.5	38.3
अन्य व्यवसाय	23.0	25.5	14.0
कुल	100	100	100

शिक्षा विभाग पर खर्च की गई कुल राशि (राजपूत स्कूल-चोपासनी सहित) वर्ष 1924-25 में 3,19,084 रुपए, 1925-26 में 3,26,111 रुपए और 1923-24 में 2,84,492 रुपये थी।

यह वृद्धि जिलों में कई प्राथमिक विद्यालयों के खुलने के साथ-साथ निरीक्षण कर्मचारियों की संख्या में वृद्धि के कारण हुई थी।

उच्च स्तरीय शिक्षा/व्यावसायिक शिक्षा

उच्च स्तरीय शिक्षा

सर प्रताप ने शिक्षा की महत्ता को तो स्वीकारा ही उसके साथ ही उन्होंने युग की मांग के अनुरूप शिक्षा प्रणाली को ढाला। अंग्रेजी भाषा और उसके माध्यम से नव शिक्षा प्राप्त कर यहां के लोग आधुनिक युग में विज्ञान के महत्व को समझ सके। स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त उन्होंने राज्य में उच्च शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की प्रगति की ओर भी ध्यान दिया। राज्य में ही नहीं दूसरे प्रदेशों में भी शिक्षा और तकनीकी शिक्षा के लिए जोधपुर राज्य ने दिल खोलकर सहायता प्रदान की। महाराजा सुमेरसिंह के समय जब सर प्रताप मारवाड़ के रीजेंट थे। उस समय के एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी कि शिक्षा के लिए उनके हृदय में कितनी श्रद्धा और प्रेम की भावना थी। 3 फरवरी 1913 को दरभंगा नरेश रावणेश्वर एवं पंडित मदनमोहन मालवीय 'हिन्दू युनिवर्सिटी' के लिए चंदा एकत्र करने आये उस समय जोधपुर की ओर से 2 लाख रुपये नकद और चैबीस हजार रुपये सालाना शिल्पकला विज्ञान की शिक्षा (Hardinge Chair of Technology) के लिए देना निश्चित किया गया।[27]

उच्च शिक्षा की दृष्टि से दरबार हाई स्कूल अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। दरबार हाई स्कूल में वर्ष 1926-27 में उच्च कक्षाओं के छात्रों द्वारा एक वाचनालय खोला गया था और काफी संख्या में पाठकों द्वारा इसका उपयोग किया जाता था।

स्कूल लिटरेरी एंड डिबेटिंग सोसाइटी का निर्माण भी किया गया। इस सोसाइटी की वर्ष के दौरान सात बैठकें कीं।

जसवंत कॉलेज

जसवंत कॉलेज के नाम से जाना जाने वाला एक इंटरमीडिएट कॉलेज वर्ष 1893 में खोला गया था और शिक्षा विभाग को अधीक्षक पंडित सूरज प्रकाश के अधीन रखा गया था।[28] सन् 1896 में स्थानीय जसवंत कॉलेज में 'इलाहाबाद यूनिवर्सिटी' की बी.ए. तक की पढ़ाई का प्रबन्ध हो जाने से जनता को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सुविधा हो गयी।[29]

जसवंत कॉलेज में वर्ष 1926-27 में लड़कों की कुल संख्या पिछले वर्ष के 107 की तुलना में 138 थी। विश्वविद्यालय परीक्षाओं के परिणाम निम्नलिखित थे [30]-

तालिका सं.-8

जसवंत कॉलेज में वर्ष 1926-27 में परीक्षाओं के परिणाम

परीक्षा	सम्मिलित छात्र	उत्तीर्ण की संख्या	प्रतिशतांक
इंटरमिडिएट	45	28	62%
बी.ए.	14	8	57%

महाराजा उम्मेदसिंह के समय वर्ष 1930-31 ई. तक जसवंत कॉलेज में डिग्री कक्षाओं सहित जोधपुर राज्य संस्थानों में शिक्षा निःशुल्क थी। जसवंत कॉलेज को बी.ए. के लिए आगरा विश्वविद्यालय से संबद्ध किया गया था। अंग्रेजी, गणित, दर्शनशास्त्र, अर्थशास्त्र और संस्कृत के विषयों में डिग्री परीक्षा और हाई स्कूल और इंटरमीडिएट शिक्षा बोर्ड, राजपूताना, मध्य भारत और ग्वालियर द्वारा मान्यता प्राप्त थी। इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए कला वर्ग में- अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, इतिहास, तर्कशास्त्र, अर्थशास्त्र, गणित तथा विज्ञान वर्ग में- अंग्रेजी, गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और वाणिज्य शुरू किया गया था।

पुस्तकालय और वाचनालय–

जसवंत कॉलेज के मौजूदा वाचनालय और पुस्तकालय का भी बहुत विस्तार किया गया।

शारीरिक गतिविधियाँ

खेलों को अनिवार्य कर दिया गया है और खेलों में नियमित उपस्थिति ने छात्रों के शरीर में काफी सुधार किया है। पक्के टेनिस कोर्ट स्थापित किए गए हैं और एक फलता-फूलता क्लब मौजूद है। वॉलीबॉल शुरू किया गया है और बहुत लोकप्रिय हो गया है। एक कैडेट कोर शुरू किया गया है और भर्ती प्रशिक्षण सबसे उत्साहजनक रहा है।

सर प्रताप ने राज्य में पहले से स्थापित स्कूलों को तो सरकारी सहयोग प्रदान किया ही साथ ही नये स्कूल भवनों के लिए राज्य की ओर से महत्वपूर्ण प्रोत्साहन के साथ वित्तीय सहायता भी प्रदान की।

वर्ष 1945-46 में महाराजा उम्मेदसिंह के कार्यकाल में शैक्षिक गतिविधियां पर दृष्टि डालते है तो ज्ञात होता है कि उच्च शिक्षा के लिये जसवंत महाविद्यालय में कला, विज्ञान और वाणिज्य की स्नातक स्तर तक की कक्षाएं थी, तथा आगरा विश्वविद्यालय से यह महाविद्यालय संबंधित था। हाई स्कूल कक्षा के छात्र व छात्राओं के लिये विद्यालय विद्यमान थे, ये शिक्षा बोर्ड राजपुताना एवं सेन्ट्रल इण्डिया, अजमेर से मान्यता प्राप्त थे, अंग्रेजी उच्च प्राथमिक विद्यालयों और हिन्दी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बोर्ड की परीक्षा सातवीं कक्षा के पश्चात् प्रारम्भ हो जाती थी, प्राथमिक विद्यालय और लोअर प्राथमिक विद्यालय में एक अध्यापक होता था। संस्कृत भाषा के प्रसार के लिये एक विशेष संस्कृत महाविद्यालय था तथा एक कॉमर्शियल स्कूल' भी था, जहाँ 'जूनियर और सीनियर डिप्लोमा' दिया जाता था।

शिक्षा और रोजगार –

शिक्षा का उद्देश्य अंततः रोजगार के अवसर हासिल करना था। व्यक्तियों ने उच्च शिक्षण संस्थानों में दाखिला लिया, ताकि वे नौकरियों में संलग्न होने के लिए खुद को पयाज़ रूप से तैयार कर सकें। जब व्यक्ति उच्च शिक्षा का विकल्प नहीं चुनते हैं, तो वे केवल बुनियादी शिक्षा प्राप्त करते हैं और पढ़ने, लिखने और अंकगणित के अपने साक्षरता कौशल को बढ़ाते हैं। चूंकि सभी प्रकार के रोजगार के अवसरों और नौकरियों के लिए व्यक्तियों को बुनियादी साक्षरता कौशल रखने की आवश्यकता होती है। रोजगार के अवसरों का अधिग्रहण आय के सृजन में योगदान देगा, जिसके कारण व्यक्ति अपने

रहने की स्थिति को उचित तरीके से बनाए रखने में सक्षम होंगे।

व्यावसायिक शिक्षा –

व्यावसायिक शिक्षा के अधिग्रहण के माध्यम से, व्यक्ति विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि कलाकृतियां, हस्तशिल्प, रेशम बुनाई, तथा बढ़ईगीरी आदि के रूप में कौशल प्राप्त करने में सक्षम होंगे। व्यक्तियों की संख्या, विशेष रूप से ग्रामीण समुदायों के भीतर यह दृष्टिकोण था कि बढ़ईगीरी, शिल्पकार, कारीगर आदि जैसे व्यवसाय उन्हें अपने कौशल और क्षमताओं का उपयोग करने और अपनी आजीविका आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम बनाएंगे। जब व्यक्तियों ने सिर्फ मिडिल स्कूल या हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त की, तो वे अपने कौशल को विकसित करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करेंगे। इन कौशलों के विकास के साथ, वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे। यह सिफारिश की गई थी कि स्कूल और कॉलेज भी व्यक्तियों को व्यावसायिक शिक्षा का प्रावधान करेंगे।

महाराजा सरदारसिंह के शासनकाल में वर्ष 1908 जोधपुर में शिक्षा की प्रगति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दू रहा है। एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूलों के शिक्षकों के लिए एक प्रशिक्षण स्कूल खोला गया। स्कूलों के निरीक्षक, जे.जे. हाथी को शिक्षा में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज, इलाहाबाद भेजा गया था और एक अन्य शिक्षक को शिक्षण में जूनियर डिप्लोमा के लिए भेजा गया था।[31] उसी वर्ष, स्टेनोग्राफी और टाइप-राइटिंग में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए दरबार हाई स्कूल के सहायक के रूप में बिजनेस क्लास खोला गया था।[32]

1934-35 में महाराजा उम्मेदसिंह ने शिक्षा को रोजगार से जोड़ने के क्रान्तिकारी विचार को कार्यरूप में परिणित करने के लिये अपनी मंजूरी दे दी थी।[33] उन्होंने प्रावधिक और व्यवसायिक शिक्षा प्रदान करने के लिए इन कक्षाओं को प्रारम्भ किया था। ये कक्षाएं जोधपुर शहर तथा जोधपुर राज्य के अन्य जिलों में भी आरम्भ की गई। इस शिक्षा को विद्या विषयक शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया गया। महाराजा उम्मेदसिंह यह चाहते थे कि हाई स्कूल तथा उच्च प्राथमिक स्तर उत्तीर्ण करने के बाद छात्रों को अपना काम-धन्धा प्रारम्भ कर देना चाहिये तथा असाधारण बुद्धि वाले व्यक्ति को ही आगे की पढ़ाई करनी चाहिये। उन्होंने जोधपुर में बढ़ती हुई बेरोजगारी को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों में सिलाई, कृषि, बढ़ई, चमड़े का कार्य, कालीन व दरी बुनना तथा बागवानी के विषय प्रारम्भ करवाये थे।

सिलाई-बुनाई-

सिलाई अध्यापक का भत्ता बारह रुपये से पचास रुपये तक कर दिया गया। नागौर खिवण्डी, जालोर मेड़ता, बालोतरा, मकराना, फलोदी, सांचोर, पाली, भीनमाल, डीडवाना-कोतवाली, बाड़मेर और सोजत में इन पदों को नियमित कर 25-1-35 की वेतन श्रृंखला में नियमित कर दिया गया। वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल तथा हाई स्कूल में वरिष्ट पद का निर्माण कर उनकी वेतन श्रृंखला 30-3-60 तक कर दी गई।[34]

कृषि-

नागौर, बाली और जसवन्तपुरा के विद्यालयों में कृषि अध्यापकों के पदों को नियमित कर 40-3-60 की वेतन श्रृंखला में चयनित किया गया। दो वरिष्ठ पदों को सृजित कर 45-3-75 की वेतन श्रृंखला की गई। ये। पद विद्याशाला जोधपुर तथा बिलाड़ा में निर्मित किये गये।

बढ़ईगिरी-

इस विषय हेतु वेतन श्रृंखला 25-1-35 में अध्यापकों का चयन किया जाने लगा। किन्ही विद्यालयों में अध्यापकों को इस कार्य हेतु बीस रुपये मासिक भत्ता दिया जाता था। ऐसे विद्यालय जालौर और सुमेरपुर में थे।

चमड़ा कार्य-

यह विषय दरबार मुस्लिम विद्यालय, जोधपुर में खोला गया था।

कालीन व दरी बुनाई-

छात्रों को स्कूलों में कालीन व दरी बुनाई का कार्य सिखाया जाने लगा। कालीन बुनाई अध्यापक की वेतन श्रृंखला 25-1-35 रखी गई। देसूरी परगने में यह विषय खोला गया था।

इसके अतिरिक्त बागवानी, मिट्टी के खिलौने का निर्माण, कपड़े बुनने और शीशे से समान बनाने का कार्य भी विद्यालयों में सिखाया जाने लगा था। इन कक्षाओं को नियमित और सुचारू रूप से चलाने के लिये प्रशिक्षित अध्यापकों की नियुक्ति के आदेश दिये थे।

वर्ष 1937-38 ई. में कई विद्यालयों में कृषि तथा उद्योग की कक्षाएं प्रारम्भ की गई जिससे ग्रामीण जनता को लाभ मिल सके। यह नीति अपनाई गई की सैकण्डरी व

उच्च शिक्षा को अविलम्ब बढ़ावा दिया जाये। खालसा क्षेत्र में पर्याप्त प्राथमिक विद्यालय खोले जा चुके थे। अतः अब जागीर क्षेत्र में शिक्षा के विकास पर ध्यान रखने की नीति अपनाई गई। अंग्रेजी शिक्षा को पांचवीं कक्षा से प्रारम्भ किया गया जो कि दूसरी और तीसरी कक्षा से आरम्भ हो जाती थी। पिछले 4 वर्षों के अन्तर्गत विद्यार्थियों को स्वावलम्बी बनाने के लिये उद्योग तथा कृषि कक्षाएं विद्यालयों में खोली गई। इन कक्षाओं की उपयोगिता तथा लोकप्रियता को देखकर इनके विकास के नये कार्यक्रमों को आरम्भ करने की योजनाएं बनाई गई।

शिक्षक प्रशिक्षण –

प्रत्येक प्रांत में शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना को महत्वपूर्ण माना गया। शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण स्कूल इंजीनियरिंग, चिकित्सा और कानून के विषयों से संबंधित थे। शिक्षकों का प्रशिक्षण एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। उनके लिए पर्याप्त ज्ञान होना महत्वपूर्ण है, ताकि वे छात्रों के बीच उचित तरीके से सीखने की सुविधा प्रदान कर सकें। यह अनुशंसा की गई कि प्रत्येक प्रांत में कम से कम एक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय होना चाहिए। शिक्षक, जो अच्छी तरह से योग्य और अनुभवी थे, अच्छी कमाई करते थे। शिक्षकों को उनकी प्रशिक्षण अवधि के दौरान छात्रवृत्तियां भी दी गईं, जिसने उन्हें इस पेशे में अपनी सर्वश्रेष्ठ क्षमताओं के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया। शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय में तियालीस विद्यार्थी शिक्षण प्राप्त कर रहे थे। उनमें सैंतीस पुरुष व छः महिलाएं थी।[35]

वर्ष 1926-27 में स्थानीय भाषा के शिक्षकों के प्रशिक्षण में सुधार की दृष्टि से, जो कि तीन वर्षों से अस्तित्व में है, को पुनर्गठित करने और इसे एक विशेष शिक्षक के प्रभारी बनाने का निर्णय लिया गया ताकि नवीनतम विधियों की व्यवस्था की जा सके। एक शिक्षक को गांव के स्कूल प्रशिक्षण में विशेषज्ञता के लिए पंजाब के मोगा स्थान पर भेजा गया था और दो को अजमेर में प्रशिक्षण के लिए प्रतिनियुक्त किया गया था।[36]

महिला शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल–

अक्टूबर 1930, में 11 महिला शिक्षिकाओं के साथ महिला शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल खोला गया था, जिन्हें शिक्षण के सरल तरीकों में प्रशिक्षण देने के लिए जिला स्कूलों से लाया गया था।[37] 1 दिसंबर 1930 को 22 विद्यार्थियों के साथ एक सिलाई क्लास शुरू की गई। उन्हें हिंदी, सादी और फैंसी सुई का काम, प्रारंभिक ड्राइंग, पेपर कटिंग, फोल्डिंग और क्ले मॉडलिंग सिखाया जाता था। फिजिकल कल्चर की भी शिक्षा दी गई। ड्रिल के अलावा लड़कियों और लड़कों दोनों ने बैडमिंटन और बास्केट बॉल खेली।

वर्ष 1932-33 में जोधपुर राज्य की शिक्षा प्रणाली में तीन महत्वपूर्ण शाखाएँ

शामिल थीं[38], यथा- कॉलेज, लड़कों के लिए एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल और लड़कों और लड़कियों के लिए वर्नाक्यूलर स्कूल। शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए संस्थान, एक तकनीकी स्कूल और संस्कृत पढ़ाने के लिए विशेष स्कूल थे। एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल दो वर्गों के थे- हाई स्कूल और मिडिल स्कूल। जबकि स्थानीय स्कूलों में मिडिल, प्राइमरी और लोअर प्राइमरी स्कूल शामिल थे। उच्च कक्षाओं और कॉलेज में लड़कों और लड़कियों के लिए सह-शिक्षा की अनुमति थी। उस स्तर पर लड़कियों के लिए अलग शिक्षा उपलब्ध नहीं थी और इसलिए, जोधपुर में लड़कियों के लिए केवल एक एंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूल शुरू किया गया था जो लॉअर मिडिल वर्ग तक पढ़ाया जाता था।

1932-33 ई. में जोधपुर में मारवाड़ शिक्षक संघ की स्थापना हुई।[39] इस संघ का उद्देश्य राज्य में नियोजित शिक्षकों द्वारा शिक्षण के तरीकों में सुधार करना है। इन उद्देश्यों को मॉडल पाठों, व्याख्यानों और सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त करने की मांग की गई थी। वार्षिक शैक्षिक प्रदर्शनी, भाषण, प्रतियोगिता, फुटबॉल, वॉलीबॉल और खेल टूनार्मेंट इस संघ के कार्यों की उल्लेखनीय विशेषताएं थीं। इसकी अपनी एक पत्रिका भी थी, जिसका नाम ''द मारवाड़ शिक्षक'' था और वर्ष 1932-33 में इसके 170 सदस्य थे।

वर्ष 1933-34 में सभी बालिका विद्यालयों से सुई के काम और अन्य हाथ के काम की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई थी और इस प्रदर्शनी का हरहाईनेस महारानी साहिबा ने दौरा किया था, जिन्होंने इसकी सराहना की और 400 रुपये का उदार दान राजमहल मिडिल स्कूल के लिए देकर प्रसन्नता प्रकट की।[40]

वर्ष 1934-35 में 4 उप निरीक्षकों, एक शारीरिक प्रशिक्षक, एक ड्रिल प्रशिक्षक और एक स्वच्छता प्रशिक्षक के साथ स्कूलों के निरीक्षकों ने हमेशा की तरह शिक्षा निदेशक की सहायता की।[41] बालिका विभाग में, ह्यूसन गर्ल्स स्कूल की महिला अधीक्षक और महिला शिक्षक प्रशिक्षण स्कूल की महिला प्रिंसिपल और शिक्षा निदेशक के सहायक ने निदेशक की सहायता करते थे। जोधपुर सरकार ने राज्य के बाहर के चिकित्सा और इंजीनियरिंग कॉलेजों में पढ़ने वाले राज्य के छात्र-छात्राओं को प्रति वर्ष 500 रुपये छात्रवृत्तियों के रुप में प्रदान किए गए। राज्य के भीतर ही, हर साल 6760 रुपये के मूल्य की छात्रवृत्ति और बर्सरी राज्य द्वारा दी गई। जोधपुर शहर में राजपूत, जाट और चारण बोर्डिंग हाउस संबंधित समुदायों द्वारा शुरू किए गए थे और महाराजा ने इन्हे जमीन दी थी और उन्हें उदार अनुदान भी निरन्तर रुप से दे रहे थे।

महाराजा ने वर्ष 1938 में प्रथम वर्ष में 1,15,000 और दूसरे वर्ष में 75,000 रुपये जसवंत कॉलेज में छात्रावास और नौकरों के क्वार्ट्स के निर्माण के लिए

दिए।[42] इसी तरह उन्होंने स्ट्रोम वाटर ड्रेन के निर्माण के लिए 4000 रुपए ट्यूटोरियल ब्लॉक के निर्माण हेतु 75587 रुपए कला खंड के निर्माण के लिए 167000 रुपये और जसवंत महाविद्यालय में प्रयोगशाला प्रखंड निर्माण हेतु 11 हजार रुपए दिए।

स्काउट एण्ड गाइड्स

स्कूलों के छात्रों में अनुशासन और नैतिक मूल्यों की भावना पैदा करने के लिए स्काउटिंग (बालचर) को अनिवार्य कर दिया गया था। 'मारवाड़ स्टेट बॉयज स्काउट एसोसिएशन' के गठन (1923-24 ई.) के साथ ही लोगों की आशा थी कि महाराजा उम्मेद सिंह स्काउट चीफ के रूप में रहे।[43] उनकी मदद के लिए आठ सदस्यों की एक सलाहकार समिति गठित की गई थी।[44]

स्काउट मूवमेंट ने संतोषजनक विकास दिखाया। स्काउट्स की संख्या 1924-25 में पिछले वर्ष के 96 से बढ़कर 128 हो गई, जिसमें ट्रेनिंग ट्रूप को छोड़कर, जिसमें 21 स्काउट सदस्य थे।

फरवरी 1925 में, तीसरे ट्रूप ने महामहिम महाराजा साहिब बहादुर की उपस्थिति में अन्य सैनिकों की सहायता से एक प्रदर्शन देकर उनके गठन की वर्षगांठ मनाई। स्काउट्स ने 24 मई, 1925 को श्री महाराज कुमार के जन्मदिन के उपलक्ष्य में जिमखाना में आयोजित कार्यक्रम में एक प्रदर्शन भी दिया। मार्च 1926 में, राज्य के चीफ स्काउट महाराजा साहिब बहादुर की अध्यक्षता में वार्षिक स्काउट प्रदर्शन आयोजित किया गया था।

1925-26 में, स्टेट बॉय स्काउट्स एसोसिएशन में 234 स्काउट्स के साथ सात स्काउट सैनिक थे। 1925 ई. में एक स्काउट मास्टर को प्रशिक्षण के लिए पचमढ़ी स्काउट मास्टर प्रशिक्षण शिविर में भेजा गया। जून 1925 में स्काउट्स ने उदयपुर में एक शिविर का आयोजन किया। मई 1926 में माउंट आबू में एक छोटे पैमाने पर इसी तरह का एक शिविर आयोजित किया गया था।[45]

1926 ई. में महाराजा ने शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ पाठ्यक्रमेतर कार्यकलाप को बढ़ावा देने हेतु ए. पी. कॉक्स को शिक्षा निदेशक नियुक्त किया। उन्होंने जोधपुर में शिक्षा प्रसार व उससे संबंधित अन्य कार्यक्रमों को तीव्र गति प्रदान करने में महाराजा का पूर्ण सहयोग किया। उनके प्रयास से जोधपुर के अतिरिक्त सांभर, बाड़मेर, सोजत, फलोदी, बाली, लाडनूं, भीनमाल, पाली, नागौर, सुमेरपुर, मकराना और बिलाड़ा में भी स्काउटिंग के कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। 1946 ई. तक सम्पूर्ण जोधपुर में नौ हजार स्काउट और कब्स, इक्यासी रोवर्स तथा पांच सौ पांच स्काउटर्स थे। इस तरह 141 ट्रुप्स, 191 पेक्स और ग्यारह क्रू थे। जोधपुर गर्ल्स गाइड्स सीधे तौर पर ऑल

इण्डिया गर्ल्स गाइड्स एसोसिएशन के अधीन थी जिसका प्रधान कार्यालय कलकत्ता में था।[46]

इस विस्तार के फलस्वरूप 1923-24 ई. में शिक्षा पर व्यय तीन लाख रुपए और 1924-25 ई. में बढ़कर सवा तीन लाख रुपए हो गया। छात्रों की संख्या भी बढ़कर क्रमशः 8011 और 8,657 हो गई।[47]

1946-47 ई. में शिक्षा पर 15.47 लाख रुपये खर्च किए गए थे और सितंबर 1946 ई. में लड़कों के लिए 255 स्कूल और लड़कियों के लिए 51 स्कूल अस्तित्व में थे। इनमें से 172 स्कूल राज्य सरकार के थे, 49 सहायता प्राप्त थे और 35 मान्यता प्राप्त थे। 16 एंग्लो-वनाज़्क्यूलर और 249 स्थानीय भाषा के स्कूल थे। एंग्लो-वर्नाक्यूलर क्षेत्र में 1 कॉलेज, 13 हाई स्कूल, दो अपर मिडिल स्कूल, दो शिक्षक प्रशिक्षण (पुरुषों के लिए एक और महिलाओं के लिए एक) कॉलेज और दरबार हाई स्कूल से संबंधित एक बिजनेस कोचिंग क्लास थे। महाराजा ने लड़कियों के लिए राजमहल स्कूल बनवाया और 1941 ई. में इस पर 14,300 रुपये खर्च किए। 1940-41 ई. के वित्तीय वर्ष में 1,04,196 रुपये शिक्षा विभाग के भवन पर खर्च किए गए। महाराजा ने मेयो कॉलेज, अजमेर के 10 दो मंजिला कमरों पर 42,000 रुपये खर्च किए। मिस्टर रितेही को हाउस मास्टर नियुक्त किया गया था। महाराजा ने बुद्धिमान और मेधावी छात्रों के लिए छात्रवृत्ति शुरू की।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विकास

पशुपालन और कृषि विज्ञान के लिए उन्होंने इरविन छात्रवृत्ति शुरू की।[48] जब बनारस हिंदू विश्वविद्यालय शुरू हुआ, जोधपुर राज्य ने सहायता के रूप में 2,00,000 रुपये दिए और हर साल 24,000 रुपये प्रौद्योगिकी के जोधपुर हार्डिंग चेयर के लिए दिए गए। इसके अलावा हर साल जोधपुर राज्य से मेयो कॉलेज, अजमेर को 8,000 रुपये दान के रूप में दिए गए।

जोधपुर सरकार ने राज्य के बाहर के चिकित्सा और इंजीनियरिंग कॉलेजों में पढ़ने वाले राज्य के छात्र-छात्राओं को प्रति वर्ष 500 रुपये छात्रवृत्रियों के रुप में प्रदान किए गए। राज्य के भीतर ही, हर साल 6760 रुपये के मूल्य की छात्रवृत्ति और बर्सरी राज्य द्वारा दी गई। जोधपुर शहर में राजपूत, जाट और चारण बोर्डिंग हाउस संबंधित समुदायों द्वारा शुरू किए गए थे और महाराजा ने इन्हे जमीन दी थी और उन्हें उदार अनुदान भी निरन्तर रुप से दे रहे थे।

वर्ष 1946 के अंत में प्राविधिक संस्थान में बतीस छात्र व ''बिजनेस कोचिंग कक्षा'' में पन्द्रह छात्र अध्ययनरत थे।[49]

मारवाड़ फुटबॉल लीग

मारवाड़ फुटबॉल लीग की स्थापना खेलों में सद्भावना और स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता की भावना को बढ़ावा देने के लिए की गई थी।[50]

मारवाड़ फुटबॉल लीग के तत्वावधान में, वार्षिक मारवाड़ स्कूल फुटबॉल टूनार्मेंट जोधपुर में नवंबर, 1924 के महीने में आयोजित किया गया था। टूनार्मेंट को दो डिवीजनों में विभाजित किया गया था, यथा- सीनियर डिवीजन और जूनियर डिवीजन. क्रमशः 15 वर्ष से अधिक और 15 वर्ष से कम उम्र के लड़कों के लिए। 1925-26 के शीतकाल में फिर से जोधपुर में टूनार्मेंट का आयोजन किया गया।[51]

टेलीग्राफ ट्रेनिंग स्कूल

जोधपुर के दरबार हाई स्कूल से जुड़ी एक टेलीग्राफ ट्रेनिंग क्लास भी थी। वर्ष 1893-94 के दौरान 14 परिवीक्षाधीनों (प्रोबेशनर्स) को प्रवेश दिया गया, जबकि पिछले वर्ष के समाप्त होने तक 7 लड़के रोल पर थे। इनमें से 8 को संकेतक के रूप में नियुक्त किया गया, 5 को अन्य विभागों में रोजगार मिला; 3 छुट्टी लिए बिना अनुपस्थिति के लिए बर्खास्त कर दिये गये; और 2 ने इस्तीफा दे दिया और वर्ष के समाप्त होने के समय 3 लड़के ही ट्रेनिंग स्कूल में शेष बचे।[52]

इंजीनियरिंग एवं अन्य विधाएं (तकनीकी शिक्षा)

तार शिक्षा

तकनीकी शिक्षा की भी राज्य में व्यवस्था के सरप्रताप इच्छुक थे और इसी प्राशय से उन्होंने सन् 1891 की 26 जुलाई को दरबार हाई स्कूल (जो पहले तलहटी के महलों में स्थित था) में तार (Telegram) के काम की शिक्षा देने के लिए एक कक्षा खुलवाई।

बिजनेस क्लास

इस श्रेणी में छात्रों को शार्टहैंड व टाइपिंग की ट्रेनिंग दी जाती थी। इसके अतिरिक्त भू-सर्वेक्षण के लिए भी पटवारियों, अमीनों, तथा कामदारी का काम करने वाले कामदार, हुकुमत या परगनों में न्यायाधीश का कार्य करने वाले अहलकारों, वकीलों आदि के लिए भी परीक्षायें निश्चित की गई तथा इनको एक निश्चित अवधि तक अपने-अपने विषय की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ट्रेनिंग देनी पड़ती थी।

वर्ष 1924-25 में बिजनेस क्लास के छात्रों की संख्या 77 थी, और 1925-26 में, 80, जिनकी दैनिक औसत उपस्थिति क्रमशः 53 और 72 थी। इस संस्था पर किया गया खर्च 1924-25 में 3,628-7-3 रुपये और 1925-26 में 3,431 रुपये था।[53]

लॉ ट्रेनिंग स्कूल

कानूनी प्रशिक्षण प्रदान करने और मारवाड़ियों को कानूनी संहिताओं से परिचित कराने की दृष्टि से, मुसाहिब आला द्वारा एक लॉ ट्रेनिंग स्कूल शुरू किया गया था। एक अध्यादेश द्वारा शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया और अब से राज्य सेवा में निचले पदों को परीक्षा के परिणाम द्वारा भरा जा सकता था। योग्यता को आनुवंशिकता के सिद्धांत पर उचित मान्यता दी गई और सार्वजनिक सेवा में प्रत्येक प्रविष्टि एक प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से की गई। अहलमद, थानेदार, पट्टादार और मोहर्री की परीक्षाएँ संपादित की जाती थीं।

पटवारी प्रशिक्षण स्कूल

19 नवंबर, 1886 को पटवारी प्रशिक्षण के लिए एक स्कूल भी शुरू किया गया था।[54]

मिलिट्री ट्रेनिंग (सैनिक शिक्षा)

राजपूत स्कूल के छात्रों के लिए घुड़सवारी तथा सैनिक शिक्षा अनिवार्य थी। अतः उन्हें यहां इनकी शिक्षा भी दी जाती थी।

इस प्रकार सरप्रताप ने जोधपुर में शिक्षा के प्रचार व प्रसार के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये। शिक्षा के क्षेत्र में किये गये उनके प्रयास सदा स्मरण किये जायेंगे। उन्होंने युगानुरूप शिक्षा की व्यवस्था प्रदान कर जोधपुर के लोगों को शिक्षित करने में जो पहल की उसका परिणाम कालान्तर में बहुत अच्छा रहा। उन्होंने अपने प्रयासों से प्रशासन को व्यवस्थित किया और उसके पश्चात् जो नवीन सुधार किये उसके लिए पहले से ही योग्य एवं शिक्षित प्रार्थी तैयार कर दिये।

रेलवे, डाकघर, टेलीफोन, तारघर इत्यादि समाजोपयोगी आवश्यक कार्यों में इन शिक्षित युवकों का बड़ा सहयोग रहा होगा साथ ही जीविकोपार्जन के लिए तथा अपने भविष्य को बनाने के उन्हें उपयुक्त अवसर प्राप्त हुये ।

विविध प्रकार की ट्रेनिंग और विषयगत जानकारी से ही यहां के छात्र राज्य की समृद्धि और प्रगति में सहायक सिद्ध हो सके। सर प्रताप ने स्वभावानुसार तथा अपनी

रुचि और योग्यतानुसार छात्रों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की। व्यापारिक क्षेत्र में जाने के लिए व्यापारिक शिक्षा, सैनिक क्षेत्र हेतु सैनिक शिक्षा, तकनीकी कार्यों के लिए तकनीकी शिक्षा की सुविधा यह स्पष्ट सिद्ध कर देती है कि उस समय के छात्र को अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार कार्य करने का अवसर सुलभ था और उस अवसर की प्राप्ति हेतु वैसी ही शिक्षा की सुविधा भी उपलब्ध थी जैसी आज है। विविध विषय आज की शिक्षा की एक विशेषता है साथ ही आज हम जिस रोजगारोन्मुख शिक्षा और तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता महसूस करते हैं उसको सर प्रताप ने बहुत पहले ही अनुभव कर लिया था।

तालिका सं.-9

राजकीय संस्थानों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या का उनकी जातियों के अनुसार वितरण

जाति	संख्या	प्रतिशत
ब्राह्मण	801	18.4
राजपूत	248	5.6
चारण	38	0.8
महाजन	1060	38.0
कायस्थ	183	4.3
मोहम्मडन	400	9.2
अन्य जातियां	1029	23.7
	4,359	100:

तालिका सं.-10

माता-पिता या अभिभावकों के व्यवसाय के अनुसार विद्यार्थियों की संख्या

व्यवसाय	संख्या	प्रतिशत
कृषि	387	8.8
व्यापार	1706	39.2
सेवा	1247	28.6
अन्य व्यवसाय	1019	23.4
	4,359	**100%**

सरदार संग्रहालय और सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी

लॉर्ड किचनर 1909 ई. में जब जोधपुर आया तो उसके स्वागत एवं उसे राजस्थानी संस्कृति के दर्शन कराने के लिए जोधपुर रियासत की विभिन्न प्रकार की हस्तकला वस्तुएं एकत्र की गईं तथा उन्हें एक स्थान पर प्रदर्शित करने के लिए 'इण्डस्ट्रीयल म्यूजियम' की स्थापना की गई। उस समय जोधपुर रियासत पर महाराजा सरदारसिंह (1895-1911 ई.) का शासन था। इसलिए उन्ही के नाम पर यह सरदार संग्रहालय कहलाने लगा।

सर्वप्रथम, यह संग्रहालय सोजती गेट के बाहर एक भवन में खोला गया था। वहाँ से इस संग्रहालय को राईकाबाग के बाहर एक भवन में स्थानान्तरित किया गया तथा बाद में सूरसागर ले जाया गया। 1916 ई. में भारत सरकार ने सरदार संग्रहालय को मान्यता प्रदान की। 1921 ई. में सरदार संग्राहलय को दरबार स्कूल भवन में स्थानांतरित किया गया। 1935 ई. में डीडवाना के सेठ मंगनीराम बांगड़ ने इस संग्रहालय और सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी के लिए जोधपुर स्थित सार्वजनिक उद्यान (पब्लिक पार्क) में एक नवीन भवन बनवाया। 17 मार्च 1936 को वायसराय विलिंगडन ने नवीन संग्रहालय भवन और सुमेर पब्लिक लाइब्रेरी का उद्घाटन किया था।

संग्रहालय में परिवर्धन-

वर्ष 1924-25 एवं 1925-26 दो वर्षों के दौरान संग्रहालय में अग्रलिखित परिवर्धन किए गए-

तालिका सं.-11

संग्रहालय में होने वाला परिवर्धन[11]

मद	1924-25	1925-26
(1) प्रदर्शनियां	23	256
(2) चित्र	48	....
(3) सिक्के	1	39
(4) अभिलेख	16	1
(5) पुस्तकें एवं रिपोर्ट्स	640	496

पुस्तकें-

दो वर्षों के दौरान पुस्तकालय में जोड़ी गई 1,136 नई पुस्तकों में से 724 अंग्रेजी की, 373 हिंदी की, 22 संस्कृत की और 118 फारसी और उर्दू की थीं।

1924-25 और 1925-26 के वर्षों के दौरान जमाकताओं के पास क्रमशः लगभग 3,100 और 2,800 पुस्तकें प्रचलन में थीं।

पुरातात्त्विक सर्वेक्षण यात्रा-

पुरातत्त्व महानिदेशक ने 8 फरवरी, 1926 को राज्य संग्रहालय का दौरा किया और उनकी सलाह पर संग्रहालय अधीक्षक ने सिंध के मोहनजोदड़ो में खुदाई का दौरा किया। यह यात्रा ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक दृष्टि से दिलचस्प थी।

संदर्भ :

1. *फॉरेन डिपार्टमेंट पॉलिटिकल*-।, मार्च 1867, नंबर 45, जोधपुर रिकॉर्ड्स, रा.रा.अ.बी.
2. *फॉरेन डिपार्टमेंट पॉलिटिकल,* 17 नवंबर 1849, नं. 173-177, पत्र संख्या 76 दिनांक 4.9.1849 फ्रॉम पी.ए. टू द ए.जी.जी.
3. फॉर पोल 7 अगस्त, 1947 नं. 847, *सदरलैंड्स रिव्यू ऑफ जोधपुर अफेयर्स;* मारवाड़ प्रिसिस, पृ. 134
4. जनरल ए मई 1863, नंबर 62, *वेस्टर्न राजस्थान- ए मेमोयर ऑफ ट्यूर बाय ई.आई. हॉवर्ड,* डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन, बॉम्बे
5. वही
6. महेन्द्र सिंह तंवर, *मारवाड़ की स्थापत्य संपदा,* पब्लिशर्स महेन्द्र सिंह तंवर, जोधपुर, 2018, पृ. 154
7. *फॉरेन डिपार्टमेंट पॉलिटिकल,* 17 नवंबर 1849, नं. 173-177, पत्र संख्या 76 दिनांक 4.9.1849 फ्रॉम पी.ए. टू द ए.जी.जी.
8. *गजट ऑफ राजपुताना,* खंड।।।-ए, पृ. 166
9. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट्स*1876-77, पृ. 13
10. निक्सन, पी.ए. टू लॉरेंस, एजीजी नंबर 41-15 जी डी, 20 जुलाई, 1863
11. *गजेटियर ऑफ राजपुताना,* खंड।।। ए, पृ. 166
12. के.डी. अर्सकिन, पूर्वोक्त , वॉल्यूम ।।। ए, अध्याय ixi, पृ 166

13. वही

14. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 878-79, पृ. 253

15. रेउ, *मारवाड़ का इतिहास,* खंड-2, पृ. 467

16. के.डी. अर्सकिन, *राजपुताना गजेटियर्स,* वॉल्यूम 3-B, टेबल नं. III

17. *जोधपुर स्टेट रिपोर्ट वित्त* 1984-85, पृ. 80

18. विश्वेश्वरनाथ रेऊ, *मारवाड़ का इतिहास* भाग-2, पृ. 496

19. वही

20. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1900-1901, पृ. 28

21. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1900-1901, पृ. 29

22. के.डी. अर्सकिन, *राजपुताना गजेटियर्स,* विन्टेज बुक्स, 1992, पृ. 44-55

23. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट* 1924-25 तथा 1925-26, वॉल्यूम 38, पृ. 70

24. वही, पृ. 74

25. वही, पृ. 72

26. वही, पृ. 72

27. विश्वेश्वरनाथ रेऊ, *मारवाड़ का इतिहास,* भाग-2, पृ. 521

28. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट* 1896-97, पृ. 94

29. वही, भाग-2, पृ. 496

30. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट* 1926-7, अध्याय-VII, पृ 7-10

31. *रीड रिपोर्ट-एपेन्डिक्स* VIII (रीड टू आरडब्ल्यूआरएस, पैरा 8-10

32. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट* 1908-9, अध्याय-VII, पृ. 40

33. फाईल संख्या 9, 3/19 चतुर्थ, एज्यूकेशन, पत्र सं. 8688, मई 1, 1940, मिनिस्टर इन वेन्टिंग का स्टेट काउन्सिल को (महाराजा ने जून 26, 1940 को अपनी मंजूरी प्रदान की।)

34. सर्वोत्तम माथुर, *महाराजा उम्मेदसिंहः आधुनिक मारवाड़ के निर्माता,* मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर, पृ. 83-95

35. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1945-46, पृ. 97-98

36. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1926-27, पृ. 56

37. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1930-31, पृ. 56

38. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1932-33, पृ. 29

39. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1932-33, पृ. 34

40. मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट, 1933-34, पृ. 31

41. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1934-35, पृ. 31, 35

42. फाइल नं. सी/9/4, पी.डब्ल्यू.डी., महकमा खास, पृ. 52

43. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1923-24, पृ. 24

44. एमएआर (1923-24), अध्याय-7, पृ. 64

45. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट* 1924-25 तथा 1925-26, वॉल्यूम 38, पृ. 76

46. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट* 1945-46, पृ. 105

47. एमएआर (1924-25-26), अध्याय-7, पृ. 72-73; एमएआर (1923-24), अध्याय-7, पृ. 57

48. निर्मला उपाध्याय, *जोधपुर राज्य का प्रशासन (1880-1947),* पृ. 142

49. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट,* 1945-46, पृ. 97-98

50. एमएआर (1923-24), अध्याय-7, पृ. 64; मेहता, पूर्वोक्त, पृ. 49; सर्वोत्तम माथुर, *महाराजा उम्मेदसिंहः आधुनिक मारवाड़ के निर्माता,* मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर, पृ. 85-87

51. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट* 1924-25 तथा 1925-26, वॉल्यूम 38, पृ. 74

52. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट* 1893-94, पृ. 95

53. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट* 1924-25 तथा 1925-26, वॉल्यूम 38, पृ. 77

54. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट* 1886-87, पृ. 6

55. *मारवाड़ एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट* 1924-25 तथा 1925-26, वॉल्यूम 38, पृ. 77

इतिहास विभाग

खुशालदास विश्वविद्यालय,

हनुमानगढ़ (राज.)